शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

साहित्यकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी : व्यक्तित्व और कृतित्व

राजकौर (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

मनुष्य को कहानियों से प्रारंभ से ही लगाव रहा है। भारत के प्राचीन धर्मग्रन्थ नीति कथाओं से भरे पड़े हैं। इनमें मनुष्य के चित्त का परिष्कार करने की अद्भुत क्षमता मौजूद है। अवतारी महापुरुषों में जिन गुणों की उद्भावना इन कहानियों में की गयी है, आधुनिक हिंदी गद्य में कहानीकारों ने वही गुण मनुष्य में खोजने का प्रयास किया है। दूसरे की प्राण रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने वाले पात्र इन कहानियों में मौजूद हैं। ऐसे ही हिंदी के प्रसिद्द कहानीकार हैं पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर विचार किया गया है।

गुलेरी जी का व्यक्तित्व और कृतित्व

पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म, महान संस्कृत धर्मव्यावस्थापक दार्शनिक, वैयाकरण तथा प्रतिष्ठित विद्वान पं. शिवराम जी शास्त्री के घर उनकी तृतीय पत्नी से 7 जुलाई, 1883 को, शनिवार के दिन जयपुर में हुआ। पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी अपने पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे। इनकी जन्म कुण्डली में कर्क राशि का स्वामी चन्द्र था, इसलिए इनके पिता ने इनका नाम चन्द्रधर रख दिया। चन्द्रधर शर्मा और कुल की परम्परानुसार बड़े मेधावी और प्रत्युत्पन्नमति थे।1 नाम तथा गुण की कहावत को चरितार्थ करके अनुदित चन्द्र कलाओं की तरह वृद्धि को प्राप्त होकर प्रकाशित होने लगे।

पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का हिन्दी गद्य में अन्यतम स्थान है। द्विवेदी युग में हिन्दी गद्यकारों की जो मणिमाला तैयार हुई, उनमें गुलेरी जी उस मणि के समान हैं, जिसकी आभा कभी कम नहीं होगी।2 पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने हिन्दी कहानी को ऐय्यारी, तिलस्म एवं जासूसी दुनिया से निकालकर कहानी का यथार्थ स्वरूप अवतरित किया। गुलेरी जी ने केवल तीन कहानियाँ लिखकर हिन्दी कहानी-साहित्य में, ऐय्यारी, तिलस्म एवं रोमांच की गुफा से निकलकर जीवन की यथार्थ की घाटियों की ओर मोड़ दिया। उनकी प्रथम कहानी 'सुखमय जीवन' है जो 1911 ई. में भारत मित्र पत्रिका में प्रकाशित हुई।3

द्वितीय कहानी 'बुद्धू का कांटा' है, जो 1911-15 के बीच प्रकाशित हुई और तीसरी कहानी 'उसने कहा था' है, जो 1915 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। गुलेरी जी की कहानियाँ न सिर्फ कसौटी पर खरी उतरती हैं, बल्कि संपूर्ण एवं परिष्कृत गद्य शैली का सुन्दर स्वरूप भी प्रस्तुत करती हैं।

गुलेरी जी ने प्रारंभिक काल में केवल तीन कहानियाँ लिखकर मौलिक कहानियों की नींव

डाली। गुलेरीजी ने छः कहानियाँ लिखी हैं- 1. सुखमय जीवन, 2. बुद्धू का कांटा, 3 उसने कहा था, 4. धर्मपरायण रीछ, 5. घण्टाघर, 6. हीरे का हीरा।

हिन्दी में साहित्यिक निबंधों का अभ्युदय आधुनिक काल में ही हुआ। उन्होंने अपने निबंधों और लेखों के लिए सभी प्रकार के विषयों का चयन किया जैसे-आध्यात्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं भाषा-वैज्ञानिक आदि। बहुज्ञता और व्यक्तित्व की विशालता ने निबंधकार गुलेरी के विषय क्षेत्र को व्यापकता प्रदान की।4

संस्कृत विधा के तलस्पर्शी ज्ञान के कारण वैदिक और पौराणिक विषयों पर उन्होंने अनेक निबंध लिखे। जिसमें 'कछुआ धरम' और 'मोरेसि मोहि कुठाऊँ' प्रमुख हैं, इन निबंधों के बल पर गुलेरी जी ने निबंध साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त किया।

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के निबंध

1 कछुआ धर्म, 2. मोरेसि मोहि कुठाऊँ, 3. काशी, 4. काशी की नींद और काशी के नुपूर, 5. जय जमुना मैया की, 6. अमंगल के स्थान पर मंगल शब्द आदि। संस्कृत के विद्वान होने के कारण इन्होंने वैदिक और पौराणिक विषयों पर अनेक निबंध लिखे। सम्पादक होने के नाते पुस्तक-परीक्षा और वाद-विवादग्रस्त विषयों पर कलम चलाई। भाषा-विज्ञान और पुरातत्व में विशेष रूचि के कारण भाषा-वैज्ञानिक और पुरातत्व संबंधी अनेक महत्वपूर्ण विषयों का प्रतिपादन किया। राष्ट्रीयता और हिन्दी भाषा प्रेम के फलस्वरूप देशभक्ति के विषय भी उनसे अछूते न रहे। इसके अतिरिक्त दार्शनिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक विषयों के साथ-साथ शिक्षा संबंधी निबंध लेख भी इनकी लेखनी से लिखे गए। गुलेरी जी स्वभाव से सरल और विनोदप्रिय थे। इन्होंने यथेच्छित जीवन जिया और उसे साहित्य में ढाला। हास्य-विनोद भी गुलेरी जी के निबंधों में मिलता है।

समालोचना साहित्य में गुलेरी जी जीवन के लिए भिन्न-भिन्न सिद्धांतों के पक्षपाती नहीं थे। यही कारण है कि विचारधारा और लक्ष्य की इस स्पष्टता ने उनकी समालोचना को स्पष्टता प्रदान की। गुलेरी जी की 'समालोचना' में विचारों की सुनिश्चितता है, जिसमें अस्पष्टता और विरोधी कथनों का अभाव है। उनकी इसी विशेषता ने आलोचना को भव्य एवं प्रभावशाली बना दिया। अतः अपनी कुल परम्परा, संस्कारों और प्रतिभा के कारण उन्होंने जीवन और जगत को निकट एवं गहराई से देखा और परखा है और यही बातें सच्चे समालोचक के लिए अनिवार्य होती हैं।

गुलेरी जी का समालोचना साहित्य

1 पत्र-पत्रिकाओं की समीक्षा

2 पुस्तक परीक्षा अथवा पुस्तक समीक्षा

3 शोध परक अथवा गवेषणात्मक समालोचना

4. विविध

पत्रकारिता के अंतर्गत समालोचक पत्र के द्वारा गुलेरी जी एक नवीन, विशिष्ट तथा अनूठी भाषा और शैली लेकर हिन्दी साहित्य में अवतरित हुए। इसी विशिष्टता के कारण 'समालोचक' अपने युग का सामान्य पत्र माना जाने लगा। 'समालोचक' पत्र का स्तर 'सरस्वती' 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' तथा 'इन्दु' आदि पत्रिकाओं के समान ही ऊँचा था।6 इस प्रकार बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक चरण के दो महत्वपूर्ण हिन्दी पत्रों का गुलेरी जी ने सम्पादन किया।

गुलेरी जी का पत्र-पत्रिकाओं को योगदान

1. सुदर्शन की सुदृष्टि
2. समीक्षात्मक सम्पादकीय टिप्पणियाँ
3. राजस्थान समाचार
4. भारत-मित्र
5. सरस्वती
6. समालोचक

गुलेरी जी को कालजयी कहानी 'उसने कहा था' में जिन मानवीय संवेदनाओं का चित्रण किया गया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। मामा के शहर में लड़के-लड़की का मिलना, लड़के द्वारा लड़की से उसकी सगाई के बारे में पूछना, लड़की द्वारा हाँ सगाई हो गयी कहना, इस पर लड़के का क्रोध और आवेश में आना इतना स्वाभाविक बन पड़ा है के पाठक के सामने पूरा चित्र उपस्थित हो जाता है। गुलेरी जी ने फ्लेशबेक का प्रयोग कहानी में बड़ी ही ख़ूबसूरती से किया है। सूबेदारनी को भेजा सन्देश मार्मिक बन गया है और वही कहानी का शीर्षक भी है। लेखक ने सेना के जवानों की कठिनाईयों को भी कहानी में उजागर किया है। अमृतसर की गलियों में उस जमाने में गूंजने वाली ध्वनि और शब्दों का प्रयोग करके लेखक ने तत्कालीन वातावरण की सुन्दर सृष्टी की है। गुलेरी जी अपनी इसी एक कहानी के दम पर हिंदी साहित्य में अजर-अमर हो गए।

निष्कर्ष

श्री गुलेरी जी ने साहित्य की सभी विधाओं में अपना योगदान दिया है। उनके लेखन से हिंदी साहित्य समृद्ध हुआ है। प्रकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का 'हिन्दी गद्य साहित्य' में सभी विषयों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

संदर्भ सूची:

1. पीयूष गुलेरी, श्रीचन्द्रधर शर्मा गुलेरी, व्यक्तित्व और कृतित्व, प्रकाशन एवं संतति, नई दिल्ली, 1983, पृ.सं. 100

2. जनक साह, हिन्दी गद्य को गुलेरी जी की देन, नोवल्टी, पटना, 2002, पृ.सं. 2

3. वही, पृ.सं. 6

4. निधि शर्मा, श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के साहित्य का सांस्कृतिक अनुशीलन, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 16 दिसम्बर, 2009, पृ.सं. 28

5. पीयूष गुलेरी, श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी व्यक्तित्व और कृतित्व, प्रकाशन जैन एवं संतति, नई दिल्ली, 1983, पृ.सं.-325

6. वही, पृ.सं. 256